

सुकृतनि निधिड़ी (११)

श्री कीरति कन्या ज़ाई आ ।

घर घर में मंगल वाधाई आ ॥

धनु रावलपति जी राणी शील सनेह में सुघड़ सियाणी
फली सुकृतनि निधिड़ी सुहाई आ ॥१॥

श्री गौलोक जी सुख सागर श्रीकृष्ण प्रिया गुण आगर
बाल रूप सां प्रघटाई आ ॥२॥

गोप गोपियूं मंगल गाइनि नची नची था हर्ष वधाइनि
थियो धन्य धन्य रावल राई आ ॥३॥

देई दान खज़ाना लुटाया बाबा भाग भला पंहिजा भांयां
सुख आनन्द सरिता वहाई आ ॥४॥

अमां गोद में ब़ारिड़ी शोभे दिसी रूप रमा मनु लोभे
मुनी नारद कीरति गाई आ ॥५॥

देव गगन मां गुल वर्षाइनि जै जै श्रीराधा गाइनि
बृज भूमी अ जी वद्री वद्राई आ ॥६॥

नन्द नन्दन प्राण प्यारी अमां यशुमति जीअ जियारी
सभु सखियुनि साह समाई आ ॥७॥

थियो मैगसि मन में मोदु दिसी स्वामिनि बाल विनोद
जै श्री राधा कृष्ण कन्हारि आ ॥८॥